Q) सिंधु घाटी सभ्यता की सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक जीवन का वर्णन करें।

Ans) सामाजिक जीवन → हड़प्पा सभ्यता में परंपरागत परिवार की सामाजिक इकाई थी। उनका सामाजिक जीवन सुखी एवं सुविधापूर्ण था। उत्खनन में प्राप्त कुछ बृहत्संख्यक नारी मूर्तियों की प्राप्ति से संकेत मिलता है कि उनका परिवार मातृ सत्तात्मक समाज और द्रविड़, प्राक्-आर्य सभ्यता की विशेषता थी।

हड़प्पाकालीन समाज की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं।

i) हड़प्पा सभ्यता के लोग शाकाहारी तथा मांसाहारी दोनों भोजन करते थे।

ii) खुदाई से प्राप्त मूर्तियों से यह अनुमान लगाया जाता है कि वहाँ के लोग सीले वस्त्र पहनते थे।

iii) उस समय केश विन्यास प्रचलित था। स्त्रियाँ जुड़ा करती थी। पुरुष लंबे बाल और दाढ़ी-मूँछ रखते थे।

iv) इस सभ्यता के लोग आभूषण के शौकीन थे जिसमें कण्ठहार, कर्णफूल, हँसुली, भुजाबंध, कड़ा, अँगूठी करधनी आदि पहले जाते थे।

v) इनके आभूषण बहुमूल्य पत्थर, हाथी दाँत, हड्डी एवं शंख के

बनते थे।

vi) यहाँ के निवासी आमोद-प्रमोद के प्रेमी थे। पासा इनका एक काल का प्रमुख खेल था।

धार्मिक जीवन ने हड़प्पा सभ्यता के धार्मिक जीवन स्वरूप के बारे में किसी भी प्रकार का लिखित साहित्य उपलब्ध नहीं है। यहाँ हुए उत्खनन के अवशेषों के आधार पर ही हम यहाँ के धार्मिक स्वरूप का वर्णन कर सकते हैं।

i) हड़प्पा संस्कृति में मिस्त्र व मेसोपोटामिया की तरह का कोई मंदिर प्राप्त नहीं हुआ है। और न ही कोई ऐसा भवन मिला है जिसे मंदिर की संज्ञा दी जा सके।

ii) iii) मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा से प्राप्त मूर्तियों को मातृदेवी की मूर्तियाँ मानते हैं। इनसे अनुमान लगाया जा सकता है कि यहाँ मातृदेवी की पूजा होती थी जिसे आज हम दुर्गा, काली, चंडी, गौरी आदि के रूप में मानते हैं।

iii) एक मूर्ति में स्त्री के गर्भ से एक पौधा निकलता हुआ दिखाया गया है जो संभवतः धरती पर देवी की मूर्ति है। अतः संभव है कि हड़प्पावासी धरती को देवी मानकर उसकी पूजा करते थे।

iv) मेके महोदय को मोहनजोदड़ो से एक ऐसी मुद्रा प्राप्त हुई है जिसमें तीन मुख वाला पुरुष योग मुद्रा में बैठा है और इसके तीन सींग है। इसके बायीं ओर एक गेंडा और भैंसा है। दायीं ओर एक हाथी और बाघ है। इसके सम्मुख एक हिरण है इसकी तुलना पशुपति से की गई है।

v) ये लोग वृक्ष (विशेषतः पीपल) की पूजा करते थे क्योंकि मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुद्रा पर दो जुड़वा पशुओं के शीर्ष पर 9 पीपल की पत्तियाँ दिखाई गई हैं।

Scanned with CamScanner

vi) यहाँ कूबड़ वाला बैल विशेष पूजनीय था। इसके साथ-साथ नाग पूजा के भी संकेत मिले हैं।

vii) बड़ी संख्या में प्राप्त ताबीज संकेत देते हैं कि ये लोग तंत्र-मंत्र पर विश्वास करते थे और इसकी जानकारी उन्हें अच्छी तरह से थी।

आर्थिक जीवन ने हड़प्पा सभ्यता से प्राप्त साक्ष्यों से वहाँ के अर्थव्यवस्था के उन्नत स्वरूप की जानकारी मिलती है जिसकी चर्चा हम नीचे करेंगे।

i) कृषि ने हड़प्पा सभ्यता के लोगों की अर्थव्यवस्था का मूल आधार कृषि था। खेत उपजाऊ होने के कारण यहाँ अनाज की कमी नहीं थी। अनाज रखने के लिए अन्नागार का प्रयोग किया जाता था। कपास की खेती होती थी जिससे लोग अपने कपड़े बनाते थे। अनाज पीसने के लिए चक्कियाँ एवं कूटने के लिए ओखली का प्रयोग होता था। यहाँ के प्रमुख खाद्यान्न गेहूँ तथा जौ थे। जिसके साक्ष्य हमें लोथल तथा रंगपुर (गुजरात) से मिले हैं।

ii) पशुपालन ने कृषि के साथ-साथ हड़प्पावासियों की अर्थव्यवस्था पशुपालन पर भी निर्भर थे। गाय, बैल, कुत्ता, हाथी, गधा एवं ऊँट इनके प्रमुख पालतु जानवर थे। कुत्ता शिकार के काम भी आता था। इसके अलावा बिल्ली, बंदर, खरगोश, हिरण, मुर्गा, तोता, उल्लू एवं हंस आदि के चित्र मिले भी यहाँ प्राप्त मूर्तियों, खिलौनों, तथा प्राप्त मोहरों पर मिले हैं।

iii) शिल्प तथा उद्योग धंधे ने कृषि तथा पशुपालन के अतिरिक्त विशिल्प एवं उद्योग धंधे के प्रति भी हड़प्पा संस्कृति के लोगों का

Scanned with CamScanner

काल दृष्टिगोचर होता है। जिसका प्रमाण हमे खुदाई से प्राप्त कताई-बुनाई के उपकरण से मिलता है। चन्हूदड़ो मे एक कारखाना मिला है जहा पर हार मे पिरोने वाले दानो का उत्पादन होता था। मिट्टी के बर्तन बनाने के लिए चाक का प्रयोग, इसके अतिरिक्त हाथ से बनाए अन्य सामग्री का पता चलता है। इस काल मे स्वर्णकारो का व्यवसाय भी उन्नत अवस्था मे था। वे चाँदी के जेवर के साथ-साथ बर्तन भी बनाते थे, ताँबे तथा काँसे का प्रयोग मूर्तियां बनाने मे होती थी। इनसे घरेलू तथा कृषि उपकरण भी होते थे।

iii) व्यापार तथा वाणिज्य → कृषि, पशुपालन तथा उद्योग-धंधो के साथ-साथ सिंधु घाटी के निवासी की व्यापार तथा वाणिज्य मे आंतरिक तथा बाह्य व्यापार दोनो ही अच्छी व्यवस्था मे थी। इस सभ्यता के प्रमुख स्थल हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो ही व्यापार के प्रसिद्ध केन्द्र थे। दोनो के बीच की दूरी 483 km थी। लेकिन ये आपस मे मार्गो द्वारा जुड़े हुए थे। व्यापार ज्यादातर जल मार्गो द्वारा होता था किन्तु थलमार्गो से भी वे परिचित थे। उस समय सिक्को का प्रचलन नही होने के कारण संभवत: वस्तु विनिमय के माध्यम से व्यापार होता था।